सम्भावना है। इसी को **योगाच्चलित मानसः** अर्थात् योगमार्ग से भ्रष्ट होना कहते हैं। अर्जुन का प्रश्न है कि इस प्रकार के योगभ्रष्ट पुरुष की क्या गति होती है।

कच्चिन्नोभयविभ्रष्टश्छिन्नाभ्रमिव नश्यति।
अप्रतिष्ठो महाबाहो विमूढो ब्रह्मणः पथि।।३८।।

कच्चित्=क्या; **न**=नहीं; **उभय**=दोनों ओर से; **विभ्रष्टः**=भ्रष्ट हुआ; **छिन्न**=छिन्न-भिन्न; **अभ्रम्**=मेघ की; **इव**=भाँति; **नश्यति**=नष्ट हो जाता; **अप्रतिष्ठः**=आश्रयरहित; **महाबाहो**=हे पराक्रमी श्रीकृष्ण; **विमूढः**=विमोहित; **ब्रह्मणः**=भगवत्प्राप्ति के; **पथि**=मार्ग में।

अनुवाद

हे महाबाहु श्रीकृष्ण! भगवत्प्राप्ति के पथ से भ्रष्ट हुआ ऐसा आश्रयरहित मनुष्य कहीं छिन्न मेघ की भाँति नष्ट तो नहीं हो जाता?।।३८।।

तात्पर्य

उन्नति के दो मार्ग हैं। जो विषयी हैं, उनकी तो दिव्य वस्तु में कुछ भी रुचि नहीं होती। वे आर्थिक उन्नति के द्वारा विषय भोगों को बढ़ना अथवा पुण्य कर्म द्वारा उच्च लोकों की प्राप्ति करना चाहते हैं। परन्तु, जो भगवत्प्राप्ति के पथ को अंगीकार करता है, उसके लिए सब सांसारिक क्रियाओं का अन्त करके नाममात्र के लौकिक सुख को पूर्ण रूप से त्याग देना आवश्यक है। यदि महत्त्वाकांक्षी योगी अकृतकृत्य रहता है, तो वह दोनों प्रकार से हानिग्रस्त लगता है —वह न तो विषयसुख का उपभोग कर पाता है और न भगवत्प्राप्ति का आनन्द ही उसे मिलता है। इस प्रकार वह छिन्न-भिन्न मेघ के समान सब प्रकार से आश्रयरहित हो जाता है। कभी-कभी आकाश में कोई एक मेघ, बड़े मेघ में समाने के लिए छोटे मेघ-समूह से अलग हो जाता है। परन्तु बड़े बादल से मिलने में असफल रहने पर वह वायु के प्रवाहवश विशाल गगन में अपना अस्तित्व ही खो बैठता है। **ब्रह्मणः पथ** दिव्य-अनुभूति का वह मार्ग है, जिसका पथिक अनुभव करता है कि वह ब्रह्म, परमात्मा और भगवान् के रूप में प्रकट परमेश्वर श्रीकृष्ण का भिन्न-अंश है। भगवान् श्रीकृष्ण साक्षात् पूर्ण परब्रह्म हैं; अतएव उन पुरुषोत्तम का शरणागत भक्त अवश्य सिद्ध योगी है। ब्रह्म और परमात्मा की अनुभूति करते हुए जीवन के इस लक्ष्य को प्राप्त करने में बहुत जन्म लग सकते हैं: **बहूनां जन्मनामन्ते**। अतएव भगवत्प्राप्ति का सीधा मार्ग होने के रूप में भक्तियोग अथवा कृष्णभावना ही परमोच्च योग है।

एतन्मे संशयं कृष्ण छेत्तुमर्हस्यशेषतः।
त्वदन्यः संशयस्यास्य छेत्ता न ह्युपपद्यते।।३९।।

एतत्=इस; **मे**=मेरे; **संशयम्**=संशय को; **कृष्ण**=हे श्यामसुन्दर; **छेत्तुम्**=दूर करने के लिए; **अर्हसि**=(आप ही) योग्य हैं; **अशेषतः**=पूर्णरूप से; **त्वत्**=आपके; **अन्यः**=अतिरिक्त; **संशयस्य**=संशय का; **अस्य**=इस; **छेत्ता**=दूर करने वाला; **न**=